शैशवावस्था

शैशवावस्था को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल भी कहा जाता है। यह बाल विकास की प्रथम अवस्था होती है यह जन्म से लेकर 6 वर्ष तक होती है शिशु को अंग्रेजी में (Infancy) कहते है यह लैटिन भाषा के Inferi शब्द से मिलकर बना है।जिसका शाब्दिक अर्थ होता है'बोलने के अयोग्य'।

न्यूमैन का कथन है कि "5-वर्ष तक की अवस्था शरीर और मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील रहती है"

अर्थात इस अवस्था में बालक को जो कुछ भी सिखाया जाता है उसका असर तत्काल बालक पर पड़ता है। मनोविश्लेषण वादियों ने भी शैशवावस्था पर विशेष ध्यान दिया है।

कुछ महत्वपूर्ण कथन (परिभाषाएँ)

क्रो एण्ड क्रो – "बीसवीं शताब्दी को बालक की शाताब्दी माना जाता है।"

फ्रायड – "मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है वह प्रारम्भ के चार पाँच वर्षों में बन जाता है।"

एडलर – "शैशवावस्था द्वारा जीवन का पूरा क्रम निश्चित हो जाता है"

गुडएनफ के अनुसार, "व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है,उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।"

एडलर – "शैशवावस्था द्वारा जीवन का पूरा क्रम निश्चित हो जाता है"

गुडएनफ के अनुसार, "व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है,उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।"

शैशवावस्था की विकासात्मक विशेषताएँ

1. मानसिक विकास में तीव्रता
2. शारीरिक विकास में तीव्रता
3. सीखने की प्रक्रियों में तीव्रता
4. दोहराने की प्रवृत्ति
5. परनिर्भरता
6. जिज्ञासा प्रवृत्ति
7. स्वप्रेम की भावना
8. काम प्रवृत्ति

शैशवावस्था में शिक्षा का स्रोत

वैलेंटाइन के अनुसार, "शैशवावस्था सीखने का आदर्श काल है।"

शैशवावस्था में बालक के शारीरिक व मानसिक विकास के आधार पर ही उसे शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। अतः बालक को शिक्षा प्रदान करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

पालन पोषण

शारीरिक विकास की तीव्रता के कारण माता,पिता और अध्यापक को उसके स्वास्थ पर पूरा ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए बालक को पौष्टिक और संतुलित भोजन के साथ- साथ चिकित्सक व्यवस्था का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

अच्छी आदतों का निर्माण

बालक अपने आस-पास के वातावरण का अनुशरण करता है। यदि वह अच्छे वातावरण में रह रहा है तो वह अच्छी आदतों को सीख जायेगा।

करके सीखने पर अधिक महत्व देना

बालक को स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान करना चाहिए। क्योकि करके सीखा हुआ ज्ञान अधिक समय तक स्थायी रहता है। बालक किसी काम को करके सीखने में अधिक आनंद का अनुभव भी प्राप्त करता है।

- वार्तालाप का अवसर
- जिज्ञासा की संतुष्टि
- स्नेह गुण का व्यवहार